रा·रा· स·

नी रामकली ताल ।सवैया।पाइपरौं म
नुहार करौं पलका परणाय दियो भयभीने ।सो
यराई कहि केशव कैसेहूं कौरही कोरक सौंह
न कीने । माहसकै मुघसौं मुघकै छिनमै
हरि भांति सबै सुघलीने । एक उसासहीं
के उससे सिगरेई सुगंध विदा करि दीने ।

रागिनी रामकली ताल सवैया मोहिबो मो
नकी गतिको गतिह्रौ पढ्यो बैन कह्यौं पढै
गी। ओप उरो जनकी उपजै दिन कहि मटै छेगि
या न मटैगी। नैननकी गति गरुढ़ बला बल के
शबदास प्रकाश बढैगी। माई कह्रा यह माय
गी दीपनिजौ दिनहै इहि भाति बढैगी। रागि

रा॰रा॰ रागिनी रामकली ताल   सवैया बोली न हौ वे
म॰ बुलाय रहे हरि पायपरे अरुडो लिये औंडी । के
सब भेटिबेको भरि अंक छुडाइ रहे जक मैं नहि
कोडी । हृये चितैबेकौं केनो कियो सिर चांपि उ
दाय अंबर हनि छोडी । मै भरि चित न ऊन चितै सौ न र
ही गहि नैननि लाजनि गोडी । रागिनी रामकली ना॰

रागिनी रामकली ताल   सवैया धनु भृकुटि
लोचन लोलसे मेलि सु कोड कटाक्ष की कोरक
ढी। लख माधुरि बानी बसी बनराई ये केश मोर
न नास पढी। ऊच नेहु नवै नन लाज विराजति
वार गरे चहुँ ओर मढी। नवढी इति बाल हैं
बालकना हति श्रेग अनंग की फौज चढी ॥

रा.रा.
म.

सवैया। आजमैं देषीहै गोपसुता इकहोयत न है
सो शरीरकीजाई। देषनही रहिये इनिदेहकी
देषैते औरन देषी सुहाई। एकही वेक विलोक
नि ऊपर वारौं विलोकि विलोकनि काई केसव
दास कलानिध वक हूजिय काम किमेरी क
न्हाई। रागिनी रामकली ताल सवैया. ३

सवैया । बौलै न बोल बुलावन हूं नषरेष लिषै
भव प्रेम परेषौ । आपन हाथ बिलोकि बिलो
कि कही नव केसव बुद्धि बसेषौ । छोटी बडी
बिधि रेष लिषी जग आपूको रेष ह्व कौन जले
षौ । प्रेमनै बोल सह्यो न पह्यो अकुलाय कह्यो
पिय कैसो हू देषौ । रागिनी रामकली ताल ।

रा॰रा॰ स॰

हैगति मंद मनोहर केसव आनंद कंद हिये उलहे
हैं । भौंह विलासनि कोमल हासनि अंग सुवास
नि गाढ़ गहे हैं । वेक विलोकनिको अविलो ।
कि सुमारक के नंद कुमार कहे हैं । पईनो कामके
बान कहावत फूलन के विधि भूलि कहे हैं ।। रा
गिनी रामकली ताल सवैया मोहिन गायव

४ ५

कान्ह भले जू भली समुझाइ हौं मोहि समुझइकौ
जौ उमह्यौ है । केशव आपनौ मानि कह्यौ मन
हाथ पराय दै कौनै लयौ है । नैनन ही मिलबौ
करियै अब नैनन कौ मिलिवौ नौ रह्यौ है । जाउ
कह्यौ तुम जैसो सखी सुष पैहौ गुपाल मैं ऐसो क
ह्यौ है । रागिनी रामकली ताल सवैया॰

रा॰रा॰ मं॰

दि आगे कै केश आपुहि आसन दीनौ । आपुहि पा
इ पषारि भलै जल पान कौ भाजन लाइन वी
नौ । वीरा बनाइ कै आगे धरे जब वै हरि कौ कर
वीजन लीनौ । बाढ़े गये हरि ऐसो कह्यौ हसि
मैनो इनो अपराध न कीनौ । रागिनी रामकली
ताल   सवैया   विनवै विन वोपे इसा पे

जावन नावन वार अनेक सिंगार बनायो । जीह्
मै आनकौ आनिबौ कूडोपै नेरो नऊन भयो म
न भायो । भावै सनेह करिबौ करि भामिनि भाग
बडे बसनैं करि पायो । कान्हमैं सथे जवाहरनि
नाही सवाहरनिहै अब पाइ लगायो । रागिनीरा
मकली नाल   सवैया   आवन देषि लिये ३

रा॰रा॰ क॰ जु देष्यौ सबै बिन गान सुनौ जु सुनी सबही हैं य
हनौ कछु औरु बढै सबही अब मौंह करौ वकरी
जनही हैं । समुझाइ कहौ समुझी सबके सब
झूठी सबै हम सौं जु कही हैं । मान कियौ अपमा
न करौ नौ हसौ अबके हसिके कोउ कही है । रागि
नी रामकली ना॰ सबैया बैठी सषीन को

हसौ हो ठुला पैनै बोलौ रहौ निज मौनै । मोर
अनेकनि आवद्द अंक करौ रतिको प्रति रैनकी
गौनै । घवाएतैं छाडु बसाइ विरीजन आईहौ के
शव आजहौ गौनै । मोहन के मनको मोहनी
सकरौ यह थो सिष ईसिष कौनै । रागिनी रा
मकली नाल । सवैया । हिनकै इत देषहु

रा·रा·
म·

उपरी । एकबिनै ममकाय इनै उन बान कहै
बड़ भायपरी । चारु चकोर बिलोचन भामिव
झे दिसनै श्रेउरी एमरी । सखि आजगई होनी गो
कल हौं सबही मिलि दैजको चांदकरी । रागि
नी रामकली ता· सवैया हौं सुष पाइ सिषाइ
रही सिष सीष न एक सिष नेह सिषाई । मैकहै ने उष

सोभै सभा सबही के हसै नैन माझ षैसे । बूझेतैबा
त बस्याय कहै मनही मन केशवदास हसै । षेल
तिहै इत षेल उतै पियबिन षिलावनि यौं विलसै
कोई जानै नही हगदौरि कबै कितह्कै हरि ओपिन
छ्वै निकसै । रागिनी रामकली ताल सवैया
केशव रायकी सौंह कैकै कछू पकन आउमे हे

रा·रा
सं

बोल हसौंहैं । देषहु पौइकवार सकोचन आर
स लोचन आरसी सौंहैं । आपहू वैसेही साजसौ
आज सम्हलि गई पिय काल्हिकी सौंहैं । रागि
नी रामकली ताल सवैया वैठि कुंजनी हूजना
रिनमै वनिश्री हृषभान कुमारि सुभागी । षेलति
हृी सखि चौपर चारि भई नहि ठेल परी अनुरागी

8

पाइरी देषोंपै केशव केहू कुटेवन जाई। देउदिये
विन मायनिहू संग छूटन कौं षलकी षलताई।
देषहु देमयुकीषट कोटि मिटै नजटै विषकी विष
ताई। रागिनी रामकली ताल सवैया केश
व औरन सौं रसरासि रच्यो रस बाउ सबै हमसौंहै।
हौं मन मैले न जो लो कछू अब छाडहु गोलिवो

रा॰रा॰
म॰

है मरा आय गये कियौं आवेहिंगे मननी भाव
दाई । आयन नेद कुमार सवार सुकौन विचार
अवेर लगाई । रागिनी रामकली नाल सवैया
केशव जीवन जो ब्रजको निज जीवहूंने अति वा
पढ़ि भावै । जापर देव अदेव कुमारनि वारन माई
नवार लगावै । नाहरिपै नंदु गवारिकी वेटी मरा

१

पीछेते केसव बोलि उठे खनिकै चित चातुरि आन
रि जागी । जानिन काऊ कवै हरीके खरमारग
री मुरली रग लागी । रागिनी रामकली नां
सवैया । सखी भूलि गई भूलप कियौं काहू कि
भूलेई डोलत बाटत पाई । भीत भये किधौं केश
व काहूसौं भेट भई कोऊ भामनि भाई । आवत

रा॰रा॰
सं॰

ऊंज विराजति गोप वधू कमला जनु केलि ऊटी
मरमोहै । रागिनी रामकली ताल सवैया पे
य परे है ते प्रीतम मैं कहि केशव के हैं नमै हमारी
नी । मेरी सखी सिख सो पीन एक है रोषऊ की सिख
सीखि जलीनी । वेदन वेद सरोज समीर जौरे डाव देह
भई लघहीनी । मेउलटी जकरी विपि मोकडू न्यायन

10

वर पाय फेंवाय दिषावै । ह्वैनो वली अव हासनि
है ऐसे औरज देषैनो फनर आवै । रागिनी रामक
ली नाल सवैया भाषति है सषैन सषीनसौं ला
षहिये अभि लाषनियो है । कोमल हासनि नैनवि
लासनि अंग सुवासनि कोमन मोहै । मूरति वे
न किधौं तुलसी तुलसी वनमै रति मूरति को है

रा॰रा॰ म॰ काहूके प्रेम पगी हैं। रागिनी रामकली ता॰
सवैया केशव कैसेहू सुख भाए मिलै मनभा
वतो भाग भरयौरी। जानैको माई कहा भयो कौ
हैजो औधीको श्राप ऊधो सटक्यौरी। ताकहू
नहून छजै हसि बोले जऊ मेरो मोहन पाय प
रयौरी। काटहूलै इठ तेरो कठोर इतो विर

री उलटी विधि कीनी । रागिनी रामकली ता
सवैया आज कहू अखियां हरि औरसी माने
महावर माहि रंगीहैं । मोहन मोहिसी लागत
मोहि इनेपर मोहन मोहि लगीहैं । मेरी सौं
मोहूसौं मानऊ वेगि हिये रस रासकी रीति ज
गीहैं ॥ मेरे वियोगके तेज नवी कियौ केशव

रा० रा०
स

ह्रैं। रागिनी रामकली ताल   सवैया फूलके

फूल सवास ऊवास सी भाक सी से भये भौन स

भागे। केशव बाग महा वन सौं ज्वर सी चढी जौ

न्ह सवै अंगराग। नेह लग्यो उरना हर सौं निस

नाह चली करके अनुराग। मारि सो मीत विरी

सिसमी किसोरे ई सिंगार अंगार सो लागे। रा० राम० १२

12

होनल हैन जसौरी । रागिनी रामकली ता·
सवैया औपिदै आय उहे उनसौं यह भोजन
कै अवही हम ऐहैं । ताकहुंतौ अवलौं वहराइके
राषी वहराइ मन कविमैंहैं । वैठकहा इनकी फि
राकेशाव जाऊंनहौ कोऊ जाय जौंकैहैं । जानत
हैं उन आषिनितै अब है ओउमगो वहूलौ अतिरै

रा·रा· स· मलीनाल — सवैया गोप बडे बडे बैठे अथाइनि
केशव कार सभा अवगाही। खेलत बालक जा
ल गलीनमै बाल बिलोकि बिकाही। आवत जा
नि लगाई चहूंदिस हेरत मै पहिचानन काही। वे
इसौ आनन काढि कही बली हूजत है कछु ना
ही किनाही। रागिनी रामकली ना — सवैया

गाल सवैया लाडिली लीलिक लोरि लु
री कहूं लाल लकै कहूं श्रेरि लगायकै । आज
नो केशव कैसेहूं लैरूपै लागन देनिन देषहु
आयकै । वेगचलो उठि आई लिवावन दौरिश्र
केली पढ़ैं अकुलायकै । भूलेहूं गोकुल गाउंमे
गोविंद कीजे गऊवन गाइ चरायकै । रागिनी रा

रा·रा·
स·

नही बिनयो इह कान्ह कियो लखि लाल बकेलो·
हारा कै हारिबेहे भनि केशव पाय परे तो परेई
रहेनो । हौं तो यहे नवढी की बिकारनि होनो ७
मान कैौ याही तो पनो । लामी लटैं घन पात
रि देहूं जैन कबडी बिधी झोंधैं न देनो ॥ इति
रागिनी रामकली नाइका नाइक समामम ॥ १५

14

होत कहा अब के समझे समझे न तें जब है स
मजाए। एकहि वेक विलोकनि माहिं अनेक अ
मोल विवेक विकाए। जान परे न जनावङ्ज्
जनमावधि लौ उहि जानि है पाए। गात बनाय
बनाय कहा कहै लेहु मनाय मनाय ज्यौं आए।
रागिनी रामकली ताल सवैया। झलेहू सये

रा॰रां
क॰

सो दाम रूपकौसौ माला प्रेमकौसौ माला आज
लौन देखी म्रति जैसौ आज दीसौहै ॥ रागिनी
रामकली ताल कवित चंचलन ह्वैजे नाथ
अंचरा नह्वैजे हाथ मोचे नैऊसारिकाऊं म्हकौ
म्हवायोजू । मंदकरौं दीपडति चेद मुख देखि य
न दैरिके उगाई आऊं हारतैं हिषायोजू । म्हराज

रागिनी रामकली ताल कवित्त मुकता

मनिन कीहै स्रक छरीसी नाक दंतन दाडौं दा

मनी हसनी बनीसीहै । मोहनके मैनके श्रव

णन कीसी रेष भृकुटी सुवेष भाव भेद कवि

कीसीहै । बिन बनराई उझकीसी उझकेसे

सरु ऊच सझकौनो नैन जैसे उझकीसीहै । के

रा॰ रा॰
क॰

नौ देषतिंही अैसो कछुहुतो नहीं अबहूंते देषि
यत उर उठनयोहै । रहसि षिलन गई नोते जे
व भारी भई कियोयाते वाजु भयो महावर द
योहै । आंषनकी मेरी फाटनसी आवनहै जा
ननहौं पीठ लागि केषो जांकियायोहै । रागि
नी रामकली ताल कवित सषहै सषीन

मराल बाल बाहिरै विडारि दैकै भाषो न मैहू केशव
हमोहू मन भायोजू । कुलके निवास ऐसे व
चन विलास सुनि मैरुनो सुवानिहूं ने स्याम सु
ख पायोजू ॥ रागिनी रामकली माल कवि
त । इत उत चाहि देष्यो जब कोऊ ढिग नाहि
बार बार जिय कह्यो हिये कह्यो भयो है । अब लौ

रा.रा.
क.

ए यामै कौन रसहै रागिनी रामकली नाल ।
कवित्त । चंदकैसो भाग भाल भ्रकुटी कमान
कीसी मैन कैसे पैने सर नैनन विलासहै । ना
सिका सरोज गंध वाहसे सुगंध वाहू दारयोसे
दसन केसोकी जरी सो हासहै । भाईकीसी ग्रीव
भुजपान सो उदर औंर पंकजसे पाइ गति हंसकी ३

वीच दैकै भौंहैं घाय कै घवाय कहू स्वाउ वरकीनी

वस वसैहै । कोमल म्रनालकासी मलकाकी मा

लकासी वालिका जडारी मौडि मानस किपसैहै ।

जानैके विमानु भयो केशव सुनै कोवान देषो

शनि गात जान भयो कियौं श्रमहै । विरमीज

राषी यह विजनी विविध गति कहैा यौं रसिक न

रा॰ गी॰ रिवै। बोलनि हसनि मृदु चाहनी चलनि चारु
के॰ पल पल प्रति पति व्रत प्रति पारिवै। केशोदास
सविलास करहु कुअरि राधे इहि विधि मोरहू सिं
गारिवै। रागिनी रामकली ताल कविन
केशोदास सविलास मंदहास जुत अवलोकनि
अलापनिकौं आनंदु अपारहै। वहिरति मान अरु

सौजासहै । देषीइहि गुपाल एक गोपिकामैं देवना
सी सोनेसे सरीर सब सोंधे कीसी बासहै । रागि
नी रामकली ताल कवित प्रथम सकल सु
चि मज्जन अमल बास जावक सुदेस केस पास
को सुधारिबो । अंग राग भूषण विविध मुष
बास राग कज्जल कलित लोल लोचन निहा

रा॰रा॰ बल बल वीर कौसौ मात कोसौ मध मद्दौ मो
के॰ हि मन भायो है । थलसौ अचल सील अनल से
बलचित जलसे अमल तेज तेज कौसौ गायो है
केसौदास बसन अकासके प्रकास बोध बर बर
बट बट छेक बनौ छायो है । रति कौसौ रति ना
थ रूप रति नाथ कौसौ कहौ केसौ बाइ झूठ ५

5

अंतरगति मान उनि रति विपरी तिनिकौं विविधि

विचारहैं। छूटि जाति लाज जहां भूषन सुदेस

केस टूटि जात हार सब बिरचन सिंगारहैं। कूजि

कूजि उठैं रति कूजि तनि रवन घरी सोई नौसर

रति सषि और विवहारहैं। रागिनी रामक

ली ताल कवित। तान कोसे गान सब

रा॰रा॰
क

नि देवता बखानीहै । ऐसी बातें कौंन ज्ञानमा
नी मानि मेरी रानी उनके तो तेरी बानी वेदकी
सी बानीहै । रागिनी रामकली ना॰ ४ कवित्त
कैधौं बटइ काज कैधौं कुसोन सखा समाज कै
धौं कछू आज अनवासर विभानते । दोनोतें न
सोय किधौं काहूसो भयो विरोध उपज्यो प्रबोध

कौन पहि पायोहै ॥ रागिनी रामकली का
कवित । चोली कोसो पान तोहि करत सेवा
रि वोई दर्पन जैसो तोही सोज म्हरनी समनीहै ।
तेरे मनोरथ भरी रथ रथ पीछे पीछे डोलत
गुपाल मेरो गंगा कोसो पानीहै । तेही तिय
देवताये पायो पति केशोराइ पतिनी वडनप

रा॰रा॰ की । केसोदास नामै उरी टीपकी सिषासौंदोरी
के॰ डरावनि नील वास्र उनि अंग अंगाकी । पौनपा
नि पंछीपशु वासमै सवद स्रुनि जिन तिन वौ
कि वौकि चाहै चोप संगाकी । नंदलाल आवास
विलोकै कुंज जाल वाल लीनी गति नहि का
ल पिंजर पतंगाकी । रागिनी रामकली ना॰

7

किधौं उर ग्रव दानैं । स्वाव मैन देह किधौं मोह
सौ कपट नेह किधौं देषि मेह अनिड वे अधियानैं ।
किधौं मेरी प्रीतकी प्रतीत लेन केधौं राइ अजह
न आय मन स्यौं कौने वानैं । रागिनी राम
कली नाल कवित चंदन विट वृ कोमल
विमल दल ललित वलित लता लपटी लवंग

रा॰रा॰ कं

मान्यो न मनायो मन ऐसो लोहि हजिपज पी
छे पछितानहै । रागिनी रामकली नाल ।
कवित आखन ज्यौं सुजन न कानननौं सुनि
यत जैसे केसोदाइ नाम लोगनमै गायेहैं । वे
सकौ विसारे सुधी काकज्यौं भ्रमत फिरे जूठे
सीठे सीत घात ई ठ ओट ठायहैं । हरि हरि करनही

कवित । वार वार वोल्यो जव वोल्योन विहसि
नव वालक ज्यौं वोलि वेको कन विललात हैं ।
ज्यौं ज्यौं पचे पायन त्यौं पाइन ते पीन भयो होत
कहा किये अव माषन सौ मानत हैं । केशोदास
सव काहूं कीनो हठ हूं सौं हेत तोहू काढि जिय
जिये विन कहा जानत हैं । ऐसे प्यारे पियहूं कौ

रा·रा
क·

पुनि फूल माल तोरि डारी बीरा बगराइकै । लै लै
टीरू मास तजि विविध विलास हास केसौ दास
है उदास चली अकुलाइकै । सेइकै संकेत हूनो
कान्हजू सौ बोली जनो सोमा जोरे कर हूनो हूनो
उघ पाइकै । रागिनी रामकली नाल कवित्त
लीने हम मोल अनबोली भई जामे मोहू माहि

9

दौरि दौरि गहो पाय जो नैन कटोर ढौरजानि जि
य पायेहो । काको घर घालबे को बसे कहो घन
स्याम देहु ज्यों भ्रमत प्रान मेरे घर आयेहो । रागि
नी रामकली ताल कवित । देषति उदधिजा
ने देषि देषि निज गात चंपकके पान कछू लिषो
है बनाइकै । सकल खगंप फारि हरि काको मारि

रा॰रा॰ क॰ कवित्त नैननकी अनुराई बैननकी चतुराई गा
नकी सुघराई नडवनि डुनि बालकी । अपने चरित्र
निके चित्रन वचित्र चित्र चित्रनी जैसी सोहै माथ्य भुकि
कागआलकी । चंदके समा चाक चायसो वकी फि
रनि करकै निहारे मृगनैननन की पालकी ॥
की जैसे पान मागा प्यारे आई है जू आई अलबेलि

घन स्याम घन माला बोलि लाई है । देष्यो हैं है उष
जहाँ देह ऊन देषी पै देषी कैसे बाट केषो टाम
नी दिषाई है । ऊचे नीचे बीच कीच केंठकनि पीरे
पग माइस गयंद मति अति सुषदाई है । भारीय
हकारी निसि निपट अकेली तम नाही प्राण ना
थ साथ प्रेम जम हाई है । रागिनी गामकली ना

रा.गा.
के.

मेटइँगौं । तिमिर वियोग भले लोचन चकोर फु
ले आई वज्र भेद चंद्रावलि चलि चेटइँगौं । रागि
नी रामकली ताल   कवित्त उरझत उरगा
चपत फनि चरनन देषति विविध निसिचर दि
स चारके । गान तिन लगन मसलयार सुननि
न किलौं गान घोष निरघोष जलधारके । जा

ख्यालि कलकौ । रागिनी रामकली ताल ।

कवित । चंदन चढाइ चारु चंवर के उरहार ह

मन सिंगार सोहै आनंद के कंद जैसी । वारो कोरि

रति नाथ्य वाना मैं बजाय गाथ्य स्वराज मराल

साथ्य वानी जगावे दजैसी । चौकि चौकि चकई सी

सौति निकी हसी चली सौने भई हीन अरविंद इति

रा॰ रा॰ क॰ क आनि नीकेहूको लागतहैं सीताजूको हनवी
न कैसे उर आनियै। आंखिन जो देषियत सोई
सांची केशोदास काननकी सुनी सांची कबहूं
नमानियै। गोपालकी कलटाए योंही उलटा
वतिहै आजलौंतो वैसेईहैं काल्हि कौन जानियै
इति रागिनी रामकली कविते समाप्ते शुभम्

नतिन भूषण गिरत पट फाटनन कंटक अटक

उर उरज उजारके । प्रेतनकी रूंछैं नारि कौनपै

नैं सीषी यह जोग कोसी सार अभिसार अभि सा

र अभि सारके । रागिनी रामकली नाल कवि

त । हरि सेहि न सों भ्रम भूलि हून कीजे मनहो

तो कारि स्यिय हूंते हैं दान हिन हानी है । लोकमे अलो

गा-बें

वन विलसना वनेरे। उधौजे पदसेवन वीने कल्प

जगासो कुवजा उरला वनेरे। ज्यो स्रवे वालले

कमैनाही सो कुवरी स्रवे पावनरे। मगारे व्रज

को राज दीयो है हमे लावे जोग पढावनेरे॥

रागिनी वेंगाली दुमरी ताल। २। हरि स्रवे मो

रनीरलीयो नवनै भवन नही भावनरे। गावै श्र

रागिनी बंगाली डूमरी ताल । ३ । सांवराजी
होहै जाको याको जान । रतमानी परभातई
आया झूठो करो क्रोवखान । प्रकट प्रकार
करी छेक जरा पीकलांक श्रयरान । इनमैं
झूठ नहीं तिल जीकाई रंगीला प्रीतमरी आन
रागिनी बंगाली डूमरी ताल । ३ । कवनव

गा॰ ३ मन राम कृस्न राम कृस्न ध्यावै सोई । महा जप
करैरे वे हरि प्रसन्न होवैंगे । मन बच क्रम सों
याद करोरे ज्ञान करो भव पार परोरे । प्यारे रे क
रुणा सागर तिन पालो सब संसार रे ऐसे मधु
सूदन मुरारे रे । रागिनी बंगाली ठुमरी ता॰ ३ ।
मोरी गली आय के राजो हो मोरी राग॰ । हथ्यांया

दर मैकरे याकी सोवस कवऊन आवनरे ॥ रा
गिनी बेगाली ठुमरी ताल ।३। नेरीगन अपरंपा
र । अतअवंड जिनरच्यो है ब्रह्मंड अदजोति निरंज
न निराकार । जाकौं कोउ न पायो पार रे । निग
म गावै पार न पावै ब्रह्मा म्राव उचरे । ध्यान धरे जा
को पंचानन श्रीपत जश अन अभै भक्त दातार ॥

रा॰बे

ली टुमरी नाल ।३। कारीरे बदरीया राम कैसी उ
मड आई । सोवत की रित आई पीया मिले बनथाई
श्री बहेइरवे आमन भावन बिना सुना मेदि वा
हो राम कैसी ।। रागिनी बेगाली टुमरी ना
ल तितारा ।।३।। उमगे उमगे आवे गोरी
या जीया राहमारहो ।। कहा कहे कछु बमन

३

वढकर आप मोरे वालम लोक जाने प्रेमरावह्रो
रागिनी वेंगाली ढुमरी ताल ।३। नई लगन ह
म जानी रे । जो तुम रसीयां वोली वोलौ तुम हू
ते ना रस यांनी ह्रो । रागिनी वेंगाली ढुमरी ता
ला ।४। मैं गावैं नहीं जईहै राम । जो गावने की वा
न वलैहै नागर टौंना वलै हूं राम । रागिनी वेंगा

हो मेरो तन कारो मन पीय राहमारहो ॥ क
लानन्द रुकत नहीं रोके मोही लीयो हेमही
य राह मारोहो ॥ इति रागिनी बेंगाली ठु
मरी ताल तिताल समापम् ॥ ॥

रा॰वे टपा ताल ।३। मयाने वेलियावे हसनया वसदे
लोक विगाने । मिझन करदिवा रिवे पैयां ना
पउदी वे मियां रवकेरन सिमुडे आवो नैयना दे-
रागिनी बेगाली टपा ताल ।३। केहा जाउडा
कीता वे दिलनु कदर ना जाने दरकदा मियां ।
वे मनन्नु झमाक जि मेरा इस्क लगा मन लीना

रागिनी बेंगाली टपा ताल ।३। तोडे बेवखन दि
नेगा मेरा । बदले बेषी वारि बे राजनन्द हवी बेसो
गार वस्तनले साडी वोरा ॥ रागिनी बेंगाली ट
पा ताल ।३। आया निस भाल वोरोजन यार·
किड्रयांनेन्दयार । हीरनि मानिन्नकि घ्रक्कदा
पीहू दिल दिड्रई ओंमार । रागिनी बेंगाली

रा·वे वोन योरि मियो मोई गनि मन ईमान प्यारोदा ।
रागिनी बंगाली टपा ताल ।३। कि जालमा
डिवे मियो योकि सदी यारीदाले विसडडे ना
लन जानूं नामन जानूं की करवे । मावेवेखो
नेडासंवरो योभैडियाने जिंदडी दिवानी मैंडा
जिडरे । रागिनी बंगाली टपा ताल ।।३।।

दिलन्॥ रागिनी बेंगाली टपा ताल।३। चलउ
टकर दीदन यारा मियें। दीदन यारेदा ग्रामदा
जोंदा मियें। वारा वहारां निवे वेषन चलिए हो
मियेंमैंडा दिल परदा वजार मियें। रागिनी बें
गाली टपा ताल।३। देखणा दिदार जांदा प
रावले परखोयले बु मियें। खोटा खोरा पय

रा॰३॰ मार चला कौं कोडि चलावे मजनूं इस्क गरी

वो कौं मियो। ईयाबदा यद सूनमेरी दाहेफि

र याद सोमेरी मियो। रागिनी बंगाली टपा

ताल।३। खेडनदा परवे लावे भला मियो वे

मान् वाक वाक जवावो भोदा कोईवे। ओदा

नियोदा माडे हवडे शोरी लगिमुहुवत पाक

3

जाउडाक मालकीनाये। इस्क लगा मेंडा जीन
र मोदाके हाह्माल जिगर परकीनावे। रागिनी
वेगाली टपा ताल॥२॥ कौन गत भई मोरी आ
नना मिलै पिया मोकों। उन विन कल न प
र तप लछिन कैसे रेण विहाय आन मिलैं पि
या मोकों। रागिनी वेगाली टपा ताल॥३॥

रा-बे सवि आखीं मेरे प्यारेनू रान किथे वे गाविओं ॥
आपछड्डजादे वारी नाल मेंहीं दे मफ़ूड थकें
दी मैं ह्लारिओं । रागिनी बेंगाली टपा ताल ।३।
कीनावेकरेजा मारदा पारदा गम खोखा ॥
कीछड्डे दे वारीआ जय दिल वेकरारदा हैंनोया
रियांदे नाल गुजारदा । रागिनी बेंगाली टपा

रागिनी बंगाली टपा ताल ।३। होवे फोलाम
न पर चोंदियां । अंब लडंदिम माकमोंदि वि
न वढयां दियां होवे फोलामे । रागिनी बंगा
ली टपा ताल ।३। जिंद मोडियां यांदे नाल ल
गिवे । अदा रंगनें जदमे पावांगारे लगावां विन
डिठेआं मैं ठगी । रागिनी बंगाली टपा ता ।३।

रा॰ ३ नी बेंगाली टपा ताल । ३ । पलक दरे आऊ मे
रा साई । जो चाहे जग राज करवोई कर सभ
ऊदरन उसि नाई । रागिनी बेंगाली टपा ता
ल । ३ । भई लीऊं बेंमरी बिन देखे नेकनास
हाय । जबते गमन कीनो बिदेश वा भवनभा
वे कछु नहिंचा । रागिनी बेंगाली टपा ता॰ । ३ ।

ताल।३। तोरि नगरिया मैं नारे हौंगि तेतो अ
नन करा रस भोग। सदा रंग रस रंग कराई ह
मकौं दीनी बहुत विरोग। रागिनी बंगाली ट
पा ताल।३। आज तोरन गाजै आये पियारवा
घर मैरे। अंग संग रंग लागौ अघट डुरावत गा
न छिनल खेपल जपकत आप डेरैं। रागि

रा॰बे बैगानिसाधसाधसानीधापमगारे ॥ इति
रागिनी बंगाली टपा समाप्तम ॥

मग मधमेरे मगोरे धानि सामेरे सानी । पगमे
धैं धैं पगाधम धामरे सामेरे सानी । सारेगा
ममे मगारे मगामैं धाम धाम पेप धानी । साध
साध पगाधरे सदा रंग मोरी एकन मानी ॥
रागिनी बेंगाली टपा तिताला ॥ ३ ॥ पगा
मधनि सानि पेरे मपगा धरेरे । री समसाध हो

रा॰ ३

यकौ रसमंजरीमैं प्रेङ्कत जो वना कह्यौ है ॥रा
गिनी बंगाली सवैया नाल ।३। यत्र मूथ
रि लोचन लोल सो मेलि मकोड कटाक्ष की
कोर कढी । सुव माधुरि वानी वसी वनया
ई यौ केश मोहन नास पढी । क्रव तेहू नवै
नन लाज विराजति वारगाहे वंडे ओर मढी

गगिनी बेगाली सबैये नाला।३। मोहिबो मोह
नकी गनिको गानिह्री पठ्योबैन कह्रा यौं पढै
गी। ऊप उरो जनकी उपजै दिन कहि मैं छेगि
या न मढैगी। नैनन की गति गूढ चलाचल के
शवदास प्रकास चढैगी। माई कहूं यह माय
गी दीपति जो दिन है इहि भाति चढैगी। नवब

रा·बे· परसो है। नासिका री जिन नागरिन्ह गज राज
दियो नव प्रेक्रम को है। रागिनी बेगाली स
वैया नाल।२। पाइ परैं मनुहार कैरैं पलका प
र पाय दियो भय भीने। सोय गई कहि केशव
कैसेहूं कौरही कोरक सौंहन कीने। सारस के मु
ष मैं सुष व्है छिन मै हरि मानि मवैसु षलीने

नवढी उनि वालहिं वालकना हनि प्रेगा प्र
नेगकी फौज वढी । रागिनी बंगाली सबै
या नाल ।२। जहृ उरोजनके परसे रिस भो
हि चढी नवढी छिन कोरहै । दैरद वछुद त्रे
वनहीं रस रीति गही उनहीं मन मोहै । नीवी
की नीवि छुवै छावि औरसी पेलत पानि पिया

रा॰वे सखीन पक्यो अकुलाय कह्यो पिय कैसी है देषो।
रागिनी बंगाली सवैया ताल ३। आजु मै देषी
है गोप सुता इक होय न ऐसी अहीर की जाई ॥
देषत ही रहिये इति देह की देषत और न देषी सु
हाई। एकही वेक विलोकनि ऊपर वारौं विलो
कि विलोकनि काई। केसवदास कलानिधि व

एक उसासमहीके उससे सिगरेई सगोय बिदाकीर
दीने। रागिनी बेगाली सवैया ताल। ३। बोले
न बोल बुलावन हूं नषरेष लिषे भव प्रेम परे
षो। आपन हाथ बिलोकि बिलोकि कही नव
केसव बुद्धि बसेषो। छोटी बडी बिधिरेषलिषी
जगआपूकीरेष सकैान जलेषो। प्रेमने बोल

रा॰ बं॰ बिद सैाहै सोतो बेदसो देष्यौ। रागिनी बंगाली
सवैया ताल ।३। कान्ह भले जू भली समझाई
हौं मोहि समझै को जो उमग्यो हो। केसव आप
नो मानिक सो मन हाथ पराये दै कौनै लयो है॰
नैनन ही मिलबो करिये अब नैनन को मिलि
बो तौ रह्यो हो। जाइ कह्यो उनसे जैसो सखी सकुचै

रु हूजियकामकि मेरो कन्हाई । रागिनी बेगा
ली सवैया नाल । ३ । ज्यौं ज्यौं झलामसो केसव
दास विलास निवास हिये धवैरछो । त्यौं त्यौं व
छौ उर कंप कछू भ्रम भीन भयौ कियौं मीन वि
सेखौ । सदिन रोन सघी वरहीं मेरै नैन सरोज
११ नि संचकै लेखौ । नैंन कसो सष मोहन कोश्रक

रा॰बं॰ केविधि भूलि कहेहैं । रागिनी बंगाली सबै
या नाल ।१। तोहित पाय वजावत नाचत वा
र अनेक सिंगार वनायो । जीहूमै आनको
आनिवौ छोड्यौ पै नैरौ न जन भयो मनभायो ।
भावै म्हने करिबो करि भामिनि भागवडे वस
मैं करि पायो । कान्ह स्यौ मुयेज वा हति नाही

है। उपाल मे ऐसो कह्यो है। यागिनी वेंगाली

सवैया नाल। ३। है गति मेद मनोहर के सब

आनंद के दहिये उलहे हैं। और विलासनि कोम

ल हासनि अंगनबासनि गाढे गहे हैं। वे कवि

लोकनि को अविलोकि समाक ह्वै नेंद कमात

रहे हैं। पई तो कामके बान कहावत फूलन

ए॰वें वेन सिंगार समीप सिंगार किये किधौं खेद
र नाई। रागिनी वेंगाली सवैया नाल ।३।
आवत देषिलिये उठि आगेंकैं केस आपुहि
आसन दीनो। आपुहि पाई पषारि भलैं ज
लपान कौ भाजन लाइन दीनो। वीरा बना
इकै आगे धरे जब वैह्रि कौ कर वीजन ली

सुधारति नाही सुधाहूतिंहै अव पाइ लगायो।
रागिनी बंगाली सवैया ताल ।३। आजवि
राजत है कहि केसव श्रीवृषभान कुमारि क
न्हाई। वानि विरंचि वहि कुमकामरची सुवि
चारि सुबुद्धि वनाई। ऐरा विलोकि विलोकिमै
ऐसीको नारि नहि जहि नारि निवाई। सूरति

रा·बे·

जु ही गौनै। मोहन के मन को मोहनी सुकहैं। यह सिष ईसिष कौनै। रागिनी बेगाली सवैया ताल।३। हितकै इन देषउजू देषौ सवै हित वा न सुनै जु सुनी सवहीहै। यहतौ कछु औरु वहै सव ही अव सौंह करौ वकरी जनहीहैं। स मुजाइ कहैं। समुजी सव केसव रूठी सवै हम

नै। वाहूगही हरि ऐसो कह्यो हसि मैनो इतो
अपराध न कीनै। रागिनी बेंगाली सवैया
ताल।३। बिनवै बिन बोपै हमापै हमैं होउ
ला पैनै बोलै रहै तिन मौनै। मैंहू अनेक नि
आवहू अंक करौ रति कौ अति रैन की गौनै।४
वापैनै घाऊ बयाइ बिरी जब आईहौ केशव आ

रा॰ वे

की घटकोरि मिटै न घटै विषकी विषताई । रा
गिनी वंगाली सवैया नाल । ३ । केशव औरन सौं
रसि रासि रस्यो रसवादु सबै हम सौं हैं । हौं मन मे
लेन जो लो कछु अब छाडहु बोलिबो बोल हमौं
हैं । देषहु यौ इवार सको वन आरस लोचन आरसी
सौं हैं । आपजु वैसे ही साज सौं आज सम्हलि गई

मैं जु करी हैं । मान कियौ अपमान करौ तोहसो
अब के हसि के को रहीं हैं । रागिनी बेगाली सवै
या ताल ।३। हौं हाव पाइ रही सिष सौषे नए सि
षै ते हू सिषाई । मैं बहु तै डाव पाइ हही देष्यौ पै के
शव के हू कटेव न जाई । देउ दिये बिन साथ तिहू
संग कूटन को षलकी षलताई । देषहु है मध

रा-बे- निकसै। रागिनी बंगाली सवैया ताल ।३। बैठि हुती
ब्रज नारिन मै वनि श्री वृषभान कुमारि सभागी। खे
लनि हौ सषि चौपुर चारि भई नहि खेल खेरी अनुरा
गी। पीछे नैके सब बोलि उठे हसि कै विन चातुरी आ
नरी जागी। जानि न काहू कवै हरि के सर मारगारी
मरमी हरा लागी। रागिनी बंगाली सवैये समाप्तम्

पिय कालिह की सौं हैं । रागिनी बंगाली सवैया

ताल । ३ । बैठी सषीन की सौ भै सभा सबहीं के

स नैनन माझ बसै । हसि कै हैं बात वस्याय कहै

मन हीं मन केशव दास हसै । खेलनि है इनतै षे

ल उन्है पिय चित्त खिलावनि यों बिलसै । कोई

जानै नहीं दृग दोरि कवै किनकै हरि श्यों बिनकै

रा·टी·
गी·

चक्रवर्ती श्रीवासुदेव रतिकेलि कथा समेत मेतं करो
ति जयदेव कविः प्रबंधं २ यदि हरि स्मरणे सरसं म
नो यदि विलास कलासु कुतूहलं । मधुर कोमलकांत
पदावली शृणु तदा जयदेव सरस्वती ३ वाचः पल्ल
वयत्युमापतिधरः संदर्भ शुद्धिं गिरां ॥ जानीते
जय देव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूहद्रुतेः । शृंगा

अथ टोडी रागिनी गीतगोविंदपरिछेदमाह ता·
ल। ।मेघैर्मे दुरमंबरं वनभव: श्यामास्तमालद्रु
मै नैक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधेगृहं प्रापय
इत्यंनंदनि देशतश्चलितयो: प्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधामा
धवयो जयंति यमुना कूलेरह: केलय: १ वाग्देवता
चरित चित्रित चित्तसद्मापद्मावती चरणचारण

ग·गो·
गी·

चक्रगारिष्ठे केशव धृत कच्छप रूप जय जगदेशहरे २
वसति दशन शिखरे धरणी तवलग्ना शशिनिकलं
क कले व नि मग्ना केशव धृत शूकर रूप जय जग दे
श हरे ३ तव कर कमल वरे नख अद्भुत शृंगं दलित
हिरण्य कशिपु तनु भृंगं केशव धृत नर हरि रूप
जय जग दीशहरे ॥४॥ छलय सि विक्र

रोत्तर सत्प्रमेय रचनै राचार्य गोवर्द्धन स्पर्द्धी कोपिनवि
श्रुतः श्रुतिधरो धोयीक विक्ष्मापतिः ॥४॥ष्टपदी
टोडी रागिनी । ताल । । प्रलय पयोधिजले धृ
तवानसि वेदं विहित वहित्र चरित्र मखेदं केश
व धृतमीन शरीर जयजगदीश हरे ॥१॥ क्षितिरति
विपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणी धरणकिण

गी·टी
गी·

यं । केशव धृत रघुपति रूप जय जगदीश हरे ७ व
हसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं । हल हतिभी
ति मिलित यमुनाभं । केशव धृत हलधर रूप जय
जगदीश हरे ८ निंदसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं ।
सदय हृदय दर्शित पशुघातं । केशव धृत बुद्ध श
रीर जय जगदीश हरे ९ म्लेछनि वहनि धने

मणे वलि मद्भुत वामन पदनख नीर जनित जनपा
वन केशव धृत वामन मन् रूप जय जग दीशह
रे ५ क्षत्रिय रुधिर मये जगदप गत पापं । स्नापय
सि पयसि शमित भवतापं । केशव धृत भृगुपति
रूप जय जगदीशहरे ६ वितरसि दिक्षरणे दि
गपति कमनीयं । दशमुख मौलि वलिं रमणी

गा·ही· ते हलं कलयते कारुण्य मातन्वते । म्लेछान्मूर्छय
गी· ते दशा कृति कृते कृस्नाय तुभ्यं नमः १५ अष्टपदी ॥
श्रित कमला कुच मंडल धृत कुंडल । कलित ललि
त वनमाल जय जय देव हरे १ दिनमणि मंडल
मंडन भव खंडन मुनि जन मान सहंस जय जय
देव हरे २ कालिय विषधर गंजन जन रंजन ५

कलयसिकरवालं । धूमकेतुमिव किमपि करालं केशव
धृत कल्कि शरीर जय जगदीशहरे १० श्रीजयदेव
कवेरिद मुदित मुदारं । शृणु सुखदं शुभदं भवसा
रं । केशव धृत दश विध रूप जय जगदीशहरे ११
वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोल मुद्बिभ्रते दैत्यं दार
यते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते । पौलस्त्यं जय

ग·टे· सुंदर धृत मंदर श्रीमुख चंद्रचकोर । जयजयदेव हरे
गी· ७ श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदं मंगल मुज्वलगी
तं । जय जयदेवहरे ८ अष्टपदी । श्लोक । रासोल्ला
स भरेण विभ्रमभृता माभीर वाम भ्रुवा मभ्यर्णे परिर
भ्य निर्भरमुरः प्रेमांधया राधया । साधुत्वद्वदनं सुधाम
य मिति व्याहृत्य गीतस्तुति व्याजाडुद्भवचुंबित ५

यदु जल कमल दिनेश । जय जय देव हरे ३ मधुमुर
नरक विनाशन गरुडासन । सुर जलकेलि निदान
जय जय देव हरे ४ अमल कमल दललोचन भव
मोचन । त्रिभुवन भवन निधान जय जय देव ह
रे ५ जनक सुताकृतभूषण जित दूषण समर शमि
त दशकंठ । जयजय देवहरे ६ अभिनवजल धर

रा·दी·
गी·

मूर्तिमानि वमथो मधुरो हरिः क्रीडति प। नित्योत्संग
वसद्भुजंग कवल क्लेशादि वेशाचलं प्रालेयप्लवनेछ
यानु सरति श्रीखंड शैलानिलः। किंचस्निग्धरसाल
मौलिमुकुलान्यालोक्य हर्षो दया। उन्मीलन्ति कुहूः
कुहूरिति कलोत्ताला पिकानां गिरः॥ ८॥ अष्टप
दी॥ चंदन चर्चित नील कलेवर पीत वसन।

स्मित मनो हारी हरिः पातवः अनेक नारी परिरंभसं
भ्रम स्फुरन्मनो हारिविलास लालसं मुरारि मारा दु
पदर्शी यंत्यसौ सखी समक्षं पुनराह राधिका ७ वि
श्वेषा मनुरंजनेन जनयन्नानंद मिंदीवर श्रेणीश्या
मलकोमलैरुपनयन्नंगैरनंगोत्सवं । स्वछंदं व्रजसुं
दरीभिरभितः प्रत्यंगमालिंगितः शृंगारः सखि

ग·टी·
गी·

सरोजे ३ कपि कपोल तले मिलितालपितुं किमपि
श्रुति मूले । चारु चुचुंब नितंबवती दयिते पु
लकै रनुकूले ४ केलिकला कुतकेनव कावि
द मंयमुना जलकूले । मंजुल वंजुल कुंजगते
विच कर्ष करेण दुकूले । करतल ताल तरल वल
या वलि कलित कल स्वन वंशे । रास रसे सह

वनमाली। केलि चलन्मणि कुंडल मंडित गंड युगस्मि
तशाली २ हरिरिह मुग्ध वधूनिकरे। विलासिनि वि
लसति केलिपरे १ पीन पयोधर भार भरेण हरिं परि
रभ्य सरागं। गोप वधूरनु गायति काचिदुदंचित पंच
म रागं २ कापि विलास विलोल विलोचन खेलन जनित म
नोजं। ध्यायति मुग्ध वधूरधिकं मधु सूदन वदन

ग·गो
गी·

निजोत्कर्षा दीर्षा वशेनगतान्यतः कचिदपिलता कुं
जेगुंजन मधुव्रत मंडली मुखरशिखरे लीना दीना
प्युवाचरहः सखी १० कंसारिरपि संसार वासना बं
ध शृंखलां राधा माधाय हृदये तत्याज व्रज सुंद
री ११ इतस्त तस्ता ·मनु स्मृत्य राधिका मनंग बाण
व्रणखिन्न मानसः कृतानुता ।

न्तत्य परा हरिणा युवती प्रशसंसे ६ श्लिष्यति काम
पि चुंवति कामपि रमयति कामपि रामां पश्यति स
स्मित चारु परा मपरा मनु गछति वामां ७ श्रीजय
देव भणित मिद मद्भुत केशव केलि रहस्यं । वृंदा
वन विपिने ललितं वितनोतु शुभानि यशस्यं ।८।
विहरति वने राधा साधारण प्रणये हरौ विगलित

रा·टी·
गी·

कुटिलअकोप भवेण शोणा पद्म मिवो परि भ्रमता
कुलं भ्रमणेनता मह्रं हृदिसंगता मनिशं भृशं रमया
मि किं वनेन सवामिता मिह किंहृथा विलयामि ४
तन्विखिन्न मसूयया हृदयन्तवा कलयामि तन्नवे
द्यि कुतो गतासिनते नते नुनयामि ५ दृश्यसे पु
रतो गता गत मेव किंविदयासि। किंपुरे वश से ५

१

पः सकलिंद नंदनी तटान्त कुंजे विषसाद माधवः १२

॥ अष्टपदी ॥ मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधू

निचयेन । सापराधतया मयापि न वारितातिभयेन

१ हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव । किंक

रिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण किं धनेन जने

न किं मम किं जीवितेन गृहेण २ चिंतयामि तदाननं

गी·टी·
गी·

तस्या एव स्मरतो हशो मन स्थिज प्रेंखत्कटाक्षाशुग ।
श्रेणी जर्जरितं मना गपिमनो नाद्यापि संधुक्षते
१३ हृदि विलाशता हारोनायं भजंगमना यकः
कुवलय दल श्रेणी कंठेन सागरल द्युतिः मल
यज रजो नेदंभस्म प्रिया रहिते मयि प्रहरन हर
भ्रांत्यानंग क्रुधाकिमुधावसि १४ अष्टपदी ।

भ्रमं परिरंभणेन ददासि । त्वम्यता मपरं कदापि तवे
हशं नकरोमि । देहि सुंदरि दर्शनं मममन्मथेन
दुनोमि । वर्णितं जयदेवकेन हरेरिदं प्रवणेन । किं
दु बिल्व समद्र संभव रोहिणी रमणेन ६ पाणौ
मा कुरु चूत सायक मंगं मा चाप मारोपय क्रीडा
निर्जित विश्व मूर्छित जनाघातेन किं पौरुषं ।

रा॰लो॰ गी॰

वसति विपिन वितानेत्यजति ललित धाम । लुठ
ति धरणि शयने बहु विपलति तवनाम ४ भण
ति कविजयदेवे विरह विलसितेन । मनसिरभस
विभवे हरि रुदयत्न सकृतेन ५ श्लोक पूर्वंयत्रस
मंत्वयारति पते रासा दिनाः सिद्धयस्तास्मिन्नेववनि
कुंज मन्मथ महा तीर्थे पुनर्माधव: । ध्यायंस्त्वाम

॥

वहति मलय समीरे मदन मुपनिधाय स्फुटति कुसु
मनिकरे विरहि हृदय दलनाय १ सखि सीदति तव
विरहे वन माली । दहति शिशिर मयूखे मरण मनु
करोति । पतति मदन विशिखे विलपति विकलतरो
ति २ ध्वनति मधुप समूहे श्रवण मपि दधाति । मन
सि वलित विरहे निशि निशि रुजमुप याति ३

रा·टी· गी· ग्याहंसी विभ्रमालसहस्ताण्डुज सौरभं सव सुधासंदी
गिरां वक्रिमा। साविंवाधरमाधुरीति विषया संगे
पि चेन्मानसं तस्यालग्न समाधिहंत विरहव्याधि क
थं वर्त्तते १ साकूतस्मितमाकुला कुलगलगलम्मि
ल मुलासितं। भ्रूवल्ली कमलीक दर्शित भुजा मूला
र्द्धदृष्टस्तनं। गोपीनान्निभृतन्निरीक्ष्य गमितकांत

निशि जयन्त्रपितवै वालाप मेञावली भ्रयसन्नकवन्ने
म निर्भरपरी रंभामरतं वांछति १ विकरति मुहुः
श्वासा नाशाः पुरो मुहुरी क्षते प्रविशति मुहुः कुंजे
गुंजे गुंजन्मुहुर्वहु तान्यति । रचयति मुहुः शय्या
११ पर्य्याकुलं मुहुरीक्षते मदन कदन क्लान्तः कान्ते प्रिय
११·५१· स्तववर्त्तते २ नातिस्पर्शी हावा तिनेव तरला स्त्रि ।

रा॰टी॰
गी॰

सहचरी अष्टपदी ॥ ललित लवंगलता परिशी
लन कोमल मलय समीरे । मधुकर निकर करंबि
त कोकिल कूजित कुंजकुटीरे । विहरति हरि रिह
सरस वसंते नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहि
जनस्य दुरंते । उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधूज
न जनित विलापे । अलि कुल संकुल कुसुम समू

स्थिरं चिंतयन्तं तमंगय मनो द्भवोद्भवतव: क्लेशास्तव:
केशव: २ यमुना तीर वानीर निकुंजे मंदमास्थितं
प्राह प्रेमभरोद्भ्रान्तं माधवं राधिकासखी । वसंतेवा
संती कुसुम सुकुमारै रवयवै । भ्रमंती कांतारे ब
हु विहित कृष्णानु सारणां । अमंदं कंदर्पज्वरजनि
तचिंता कुलतया । वलद्बाधां राधां सरसमिद मूचे

रा·दे·
गी·

रुण कृतहासे । विरहिनि कृंतन कुंत मुखाकृति
केतकि दंतुरिताशे ५ माधविका परिमल ललि
ते नव मालति जाति सुगंधौ । मुनि मनसा मपि ।
मोहन कारिणि तरुणा कारण बंधौ ६ स्फुरदति
मुक्त लता परि रंभण मुकुलित पुलकित चूते
। वृंदावन विपिने परि सर परि गत ।

ह निराकुल वकुल कलापे २ मृगमदसौरभरभसव
शंवद नवदल माल तमाले। युवजन हृदयविदा
रण मनसिज नखरुचि किंशुकजाले। मदनमही
पति कनक दंडरुचि केसर कुसुम विकामिलित ।
शिलीमुख पाटल पटल कृतस्मर तूणविलासे
४ विगलितलज्जित जगदवलोकन तरुणक

रा·टो·
गी·

२१ उन्मीलन्मधुगंध लुब्धमधुपव्याधूत चूतांकु
र क्रीडत्कोकिल काकली कल कलै रुद्गीर्ण क
र्णज्वराः नीयंते पथिकैः कथं कथ मपि ध्यानाव
धानक्षण प्राप्त प्राण समा समागम रसोल्लासैरमी
वासराः २२ इरालोकस्तोक स्तन कन वकाशोकल
तिका विकाशः कासारो पवन पवनोयं व्यथा।

यमुना जल पूते । श्रीजयदेवभणिते मिद मुदयति ह
रि चरण स्मृति सारं । सरस वसंत समय वन वर्ण
न मनुगत मदन विकारं ८ अष्टपदी ॥ दर विद
लित मल्ली वल्लि वंचत्परागप्रकटित पट वासै
र्वासयन्काननानि । इहहि दहति चेतः केतकी
गंधबंधुः प्रसरद समबाण प्राण वद्गंधवाहः ॥

रा॰ हो
गी॰

अविरत निपतित मदन शरादिव भवद वनाय वि
शालं। स्वहृदय मर्म्म करोति सजल नलिनी द
लजालं २ कुसुम विशिख शरतल्प मनल्प विला
स कला कमनीयं। व्रत मिव तव परि रंभ सुखा
य करोति कुसुम शयनीयं॥ ३॥ वहति च गलि
त विलोचन जलधर माननकमल मुदारं। विधु

८

16

यति अपि आम्रडूंगी रगित रमणीयान मञ्जुल प्रस्त
ति भ्रूतानां सखि शिखरिणीयं सुखयति । अष्टप
दी ॥ निंदति चंदन मिंदु करण मनु विंदति खेदम
धीरं ॥ व्याल निलय मिलनेन गरल मिव कलय ।
ति मलय समीरं ।१। माधव साविरहे तवदीनाम
नसिज विशिखभया दिव भावनया त्वयिलीना

ग॰ टे॰ रि कल्प्य भवंत मतीव दुरापं । विलपति हसति
गी॰ विषीदति रोदति चंचति मुंचति तापं ८ श्रीजयदे
व भणितमिदमधिकं यदि मनसा नटनीयं । हरि
विरहाकुल वल्लव युवति सखी वचनं पठनीयं ८
अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ आवासो विपिनायते प्रिय सखी
मालापि जालायते ॥ तापो पि श्वसितेन दा

मिव विकट विधुंतुद दन्त दलन गलितामृतधारे
४ विलिखति रहसि कुरंगमदेन भवंतम समशर
भूतं । प्रणमति मकर मधो विनिधाय करेच शरं न
वचूतं ५ प्रतिपद मिदमपि निगदति माधव तव
चरणे पतिताहं । त्वयि विमुखे मयि सपदि सुधानि
धि रपि तनुते तनुदाहं ६ ध्यान लयेन पुरः प ।

गी टी
गी·

न पवन मनुपम परिणाहं । मदन दहन मिव दह
नि महदाहं ३ दिशि दिशि किरति सजल कण जाल
।। नयन नलिन मिव विगलित नालं ४ नयन विष
य मिव किशलय तल्पं । कलयति विहित हुताश
न कल्पं ५ त्यजति न पाणि तलेन कपोलं । बाल
शशिन मिव सायम लोलं ६ हरिरिति हरि रिति

18 १८

वन्हिज्वाला कलापायते । सापि त्वद्विरहेण हन्त
हरिणी रूपायते हा कथं । कंदर्पोपि यमायते विर
चयन शार्दूल विक्रीडितं अष्टपदी ॥ स्तनविनि ।
हित मपि हारमुदारं सा मनुते कृशतनु रिव भा
रं राधिका विरहे तव केशव । सरस मसृणमपि म
लयज पंकं पश्यति विषमिव वपुषि सशंकं । श्वसि

रा टी·
गी·

स्वपे नाप्नोति ध्यायत्युद्रमति प्रमीलति पतत्यश्रा
ति मूर्छत्यपि पतावत्यतन ज्वरेवरतनजीवेन्नकिं
नेरस्मात्त्ववैद्य प्रतिमप्रसीदसि तनस्यक्षोत्यथा ह
लकः ॥ १९ कंदर्पज्वरसंज्वरातुरतनोराश्चर्यमस्या
श्चिरं । चेतश्चंदन चंद्रमः कमलिनी चिंतासुसंताम्य
ति । किंतत्वांतिरतेन शीतलतरं त्वामेक मेव प्रियं

जयति सकामं । विरह विहित मरणे वनिकामे ७

श्रीजय देव भणितं मिति गीतं । सुखयतु केश

व पद मुप नीतं ८ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ स्मरतुरं

दैवत वैद्य हृद्य त्वदंग संगा मृत मात्र साध्यां । वि

मुक्त बाधां कुरुषे न राधा मुपेंद्र वज्रा दपि दारु

णोसि २५ सा रोमांचति सीत्करोति विलपत्युत्क

गी गो· स्वछंद व्रजसुंदरी जनमनस्तोष प्रदोषोदयं। कंस
वी· ध्वंसन धूमकेतुरवतु त्वां देवकीनंदनः॥ ११ ॥ अथ तां
गंतुमशक्तां चिरमनुरक्तां लतागृहे दृष्ट्वा। तच्चरि
तं गोविंदे मनसिज मंदे सखी प्राह ॥ अंगेष्वाभरणं
करोति बहुशः पत्रेपि संचारिणि। प्राप्तं त्वां परिशं
कते वितनुते शय्यां चिरं ध्यायति। इत्याकल्प वि

२.

20

ध्यायंती रहसिस्थिता कथमपि क्षीणाक्षणं प्राणिति
२७ क्षण मपि विरहः पुराण सेहे नयन निमीलि
नखिन्नया नयाते। श्वसिति कथमसौ रसालशाखां
चिर विरहेण विलोक्य पुष्पिताग्रां २८ साध्याम्र
रथ मावारविं मधुपसंलोक्य मौलस्थली नेय।
त्यो विन्न नीलरत्नमवनी भारावतारांतकः ॥

रा॰दे
गी॰

त्वदधर मधुर मधूनि पिवेन्तं १ नाथ हरि सीदति रा

धा वासगृहे । त्वदभि शारण रभसेन वलन्ती पतति

पदानि कियन्ति चलन्ती २ विहित विशद विष कि

शलय वलया । जीवति परमिह तव रति कलया

३ मुहुर वलोकित मंडन लीला । मधुरिपु रह

मिति भावन शीला ४ त्वरित मुपैति न कथ ।

कल्प नल्प रचना संकल्प लीलाशत। व्याशङ्कापि
विनात्वया वरतनर्नैषा निशांनेष्यति ३१ विपुल पु
लकपालिः स्फीत सीत्कार मंतर्जनित जडिमकाकु
व्याकुलं व्याहरंती। तवकि तव विधाया मंदकं
दर्पचिंता रसजल निधि मग्नाध्यानलग्ना मृगाक्षी
३२॥ अष्टपदी॥ पश्यति दिशि दिशि रहसि भवंतं

रा.टी.
गी.

मी कहे। आनयास्मिन दृष्टि गोचर मितः सानंद नंदा
स्पदम्। राधाया वचनं तदथग मलवान्नंदांतिके गो
पतेः। गोविंदस्य जयंति सायमतिथिः प्राशस्त्य गर्भा
गिरः ३३ अज्ञातान्तरेव झटला जल वर्त्मपाता संजा
त पातक इव स्फुटलांछनश्रीः। वृंदावनांतरम।
दीपय दंसुजालै दिंकंदरी वदन वंदन विंदु रिं

मभिसारं। हरिरिति वदति सखी मनुवारं ५ श्लिष्य
ति चुंबति जलधर कल्पं। हरि रुपगत इति तिमि
र मनल्पं ६ भवति विलंबिनि विगलित लज्जा। वि
लपति रोदति वासक सज्जा ७ श्रीजय देव वकवेरि
दमुदितं। रसिक जनतनुता मपि मुदितं ८ श्लो
क।। किं विश्राम्यसि कृष्ण भोगि भवने भांडीर भू

रा दे
गी

जगातु प्राणा विधाय माधवे प्रेमम प्राणा हरो भवि
ष्यति ३७ बाधां विधेहि मलयानिल पंचबाण प्राणा
न् गृहाण न गृहम्पुनराश्रयिष्ये । किंते कृतान्त
भगिनि क्षमया तरंगै । रंगानि सिंच मम शाम्यतु
देहदाहः ३८ । प्रक्षणा । कथितसमयेपि हरि
रहह न ययौ वनं । मम विफलमिदममल

डु: ३४ प्रमरति शशधर बिंबे विहित विलंबे च मा

धवे । विधुरा विरचित विविध विलापं सा परित्ता

पंचकारे छै: ३५ विरह पाण्डु मुरारि मुखांबुजद्यु

तिरयंनपि वेदनो विधुर नीवन नोति मनोभव:

रुहृदये हृदये मदन व्यथा ३६ मनो भवा नंदनचं

दनानिल प्रसीद रे दक्षिणा त्वंच वामनो ॥ इति गी

रा॰ दे॰
गी॰

पि कामिनी मभिसृतः किंवा कलाकेलिभिर्वद्धोवंधु
भिरन्धकारिणि वनाभ्यर्णे किमुद्भ्राम्यति कांतः क्लां
तमना मनागपि पथि प्रस्थातुमेवाक्षमः संके
तीकृतमंजुवंजुललताकुंजेपि यन्नागतः ४ अथा
गतां माधवमन्तरेण सखीमियं वीक्ष्य विषादमूकां
विशंकमाना रमितं कयापि जनार्दनं दृष्टवदेतदा २५

LS

जयदेव कवि भारनी । वसतु हृदि युवतिरिव कोम
ल कलावती ८ । अष्टपदी । श्लोक । नामसमाप्य म
यि स्वयं वर परो नीरोदनीरोदरे । शंके सुंदरीकाल
कूटमपि किंमूढोस्मडानी पतिः । अंथैवविकया
भिन्न मनसो विदित्य वहोवले । राधायाललन
कोरकोपरि मिलन्नेत्रो हरिः पानुवः । तल्किंकाम

गा॰ टी॰
गी॰

रति रणन जघन गति लोला ४ दयित विलोकित लल
ज्जित हसिता । बहुविध कूजित रतिरस रसिता ५
विपुल पुलक पृथुवेपथु भंगा । श्वसित निमीलि
त विकसदनंगा ६ श्रमजल कणभर सुभगशरी
रा । परिपतितोरसि रतिरणधीरा ७ श्रीजयदेव
भणित हरिरमितम् । कलिकलुषं जनयतु परिश

ह्व ॥ ७ ॥ ध्रुवपदं । स्मर समरोचित विरचितवेषा गलि
त कुसुम दर विलुलित केशा १ कापि मधुरिपुणा
विलसति युवतिरधिक गुणा । हरि परिरंभण व
लित विकारा । कुच कलशो परि तरलित हारा २
५१. विचल दलक ललिता ननचंद्रा । तदधर पानरभ
१६ सकृत तंद्रा ३ चंचल कुंडल ललित कपोला । मुख

गी· दे·
गो·

वने कुच युग गगने मृग मद रुचि रूषिते । मणिस
र ममले तारक पटले नखपद शशि भूषिते २ जित
विधु शकले मृदु भुज युगले करतल नलिनी दले·
मरकत वलय मधुकर निचये वितरति हिम शीत
ले ध्वनित रत्न जघने विपुल घने मनसिज कनका
सने । मणिमय रशने तोरण हसने विकिरति

मिते ८ अष्टपदी । सोरठा ॥ समुदित मदने रमणी
वदने चुंबन वलिताधरे । मृगमद तिलकं लिख
ति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे १ रमते यमुनापु
लिन वने विजयी मुरारिरधुना । घनचय रुचिरे र
चयति चिकुरे तरलित तरुणानने कुरुवक कुसु
मं चपला सुषमं रतिपति मृगकानने २ घटयति सु

रादे॰
गी॰

इरिते कविनृपजयदेवके दा। अष्टपदी॥ अनिल
तरल कुवलय नयनेन। तपति न सा किसलय
शयनेन १ सखि या रमिता वनमालिना। विक
सित सरसिज ललित मुखेन। स्फुटति न सा मन
सिज विशिखेन २ अमृत मधुर मृदुतर वचनेन।
ज्वलति न सा मलयज पवनेन ३ स्थल जल रुह

कृतवासने ५ चरणकिसलये कमलानिलयेन ।

खमणिगणपूजिते । बहिरपवरणं यावकभरणं

जनयति हृदियोजिते ६ रमयति सुदृशं कामपि

सुदृशं खलहलधरसोदरे । किमफलमवसं चि

रमिह विरसं वद सखि विटपोदरे ७ इह रसभण

ने मधुरिपुपदसेवके । कलियुगचरितं नवसतु

ग·है
गी·

इति गीग स्दयमेनेन द अष्टपदी। श्लोकः॥ नाया
तः सखि निर्दयो यदि शठस्त्वं दूति किं दूयसे ॥
स्वच्छन्दं बहुवल्लभः स रमते किं तत्र ते दूषणं ॥ प
श्याद्य प्रियसंगमाय दयितस्याकृष्यमाणं गुणै ।
रुत्कण्ठार्तिभरादिव स्फुटदिदं चेतः स्वयं यास्यति ५२
निभृत निकुंज गृहं गतया निशि रहसि निलीय

रुचिकरचरणेन । लदनि नमा हिमकर किरणेन
४ सजल जलद समुदय रुचिरेण । दहनि नमाह
दि विरह भरेण ५ कनक निकष रुचि शुचि वस
नेन । श्वसिति नमा परिजन हसितेन ६ सकलभु
वन जनवर तरुणेन । वहति नमा रुज मतिकरु
णेन ७ श्रीजयदेव भणित वचनेन । प्रविशत

ग॰ टे॰
गी॰

याते कृतपरिरंभणचुंवनया परिरभ्य कृताधरपाने
इ अलस निमीलित लोचनया पुलकावलि ललित क
पोले। श्रम जल सकल कलेवर यावर मदन मदाद
तिलोले। कोकिल कलरव कूजितया जित मन सि
ज तंत्र विचारे। श्लथ कुसुमाकुल कुंतलया नखलि
खित घनस्तनभारम् ५॥ चरण रणित मणि

वसन्ते। चकित विलोकित सकल दिशा रति रभस व
शेन रमन्ते १ सखि हे केशि मदन मुदारं। रमय मया
सह मदन मनोरथ भावितया सविकारं। प्रथम स
मागम लज्जितया पटु चाटु शतै रनुकूलं। मृदु मधु
र स्मित भाषितया शिथिली कृत जघन दुकूलं २
किसलय शयन निवेशितया चिर मुरसि ममैव शया

गा॰टै॰
गी॰

सलीलं ।८। अष्टपदी । श्लोक ॥ वृष्टि व्याकुल गोकु
ला वनवशाउद्धृत्य गोवर्द्धनं । विभ्रद्वल्लव वल्लदरी
भि राधिका नंदाच्चिरं चुंबितः । दर्पेणेव तदर्पिताधर
तटी सिंदूर मुद्रांकितो । बाहुर्गोपतनोस्तनोतु भव
तः श्रेयांसि केशद्विषः ५३ अथ कथमपि यामिनी वि
नीय स्मर शर जर्जरितापि सा प्रभाते । अनुनयवच

नूपुरया परिपूरित सुरत विताने । मुखर विशृंखल

मेखलया सकच ग्रह चुंबन दानम् ६ रति सुख समय

रसाल सया दर मुकुलित वदन सरोजे । निस्सहनि

पतित तनु लतया मधुसूदन मुदित मनोजे ७ श्री

जयदेव भणित मिद मति शय मधु रिपु निधुवन

शीले । सुख मुत्कंठित गोपिकया कथितं वितनोतु

गा॰ दे॰
गी॰

वन विरचित नीलसरूपे दशनवसन मरुणे नवकु
सुम तनोति तनुरक्त रूपं २ वपुरनुहरति नवसमरसे
गगनर रन खेरनलमे रेखे। मरकत शकल कलित क
ल धौत लिपेरिव रतिजयलेखे २ चरण कमल गल
दलक्तकस्मित सिंदेन व हृदय मदारे। दर्शयतीव
वहि मर्दन द्रुम नव किसलय परिवारे। दशनपदे

८

नेवदंतमग्रे प्रणतमपि प्रियमाह साभ्यसूयं ४४
अष्टपदी ॥ रजनिजनित गुरुजागर रागकषायित
मलसनिमेषं । वहति नयन मनुराग मिव स्फुट
मुदित रसाभिनिवेशं । याहि माधव याहि केशव
मा वद कैतववादं । तामनुसर सरसीरुह लोचन
या तव हरति विषादं । कज्जल मलिन विलोचन चुं

ग॰ टी॰ लवरितं । श्रीजयदेव भणितमिति वंचित खंडित यु
गी॰ वति विलापं । शृणुत सुधामधुरं विबुधा विबुधाल
यतोपि । ८ । अष्टपदी । श्लोक ॥ तवेदं पश्यंत्याः प्र
सर दनुरागं बहिरिव । प्रियापादालक्त छुरित
मरुण छायं हृदयं । ममाद्य प्रख्यात प्रणय भ
रभंगेन कितवत्वदालोकः शोका दपि किम

भवदयरगनम्मम जनयनि वेनमि खेदे। कथयनि
कथ मधुनापि मया मह्र नव वशेनद भेदे ५ वहि
रिव मलिव नरंनरंनव ह्रुल मनोपि मविष्यनित्
ने। कथ मथ वेचयमे जन मन गनम समशय ज्वर्
ह्रने ६ भ्रमनि भवान वृला कवलाय वनेष्ठ किम
व विविडे प्रथयनि ह्रनलि केववय् वय निर्दयवा

गी·टी·
गी

रिस्रवाव । परि ह्रर ह्रुना वेक शंको नया ममने च
न लव जवनया कोने परानव काशिनि विषति
वितनो रनो यनो नकोपि ममोनवे आणिपिनि प
वी वेमारेमे विपेहि विषेयनामद मगये विपेहिम
पि निर्दय हेन देश दोर्वलि वेयनि विडलन पीड
नानि वेडिन्नमेव मद मेचय पंचवाणा चांडाल को ३४

34

पिलज्जां जनयति ४५ पद्मापयोधरतटीपरिरम्भ
लग्नकाश्मीरमुद्रितमुरो मधुसूदनस्य । व्यक्तानु
रागमिव खेलदनंगखेद स्वेदाम्बुपूरमनुपूरयतु
प्रियम्वः ४६ प्रयान्तरे समरणरोषवशामसीम
११ निः श्वासनिस्सहमुखी सुमुखीमुपेत्य सव्रीड
११६ मीलितमुखी वदने दिनान्ते सानंदगद्गदपदं हरि

रा-दे
वी

निशाय स्त्रिय मरये ग्रयोच्य स्वप्राप्यामिनः। अष्टपदी।
वदसि यदि किंचिदपि दन्तरुचि कौमुदी हरतिद
रतिमिरमतिघोरम। स्फुरदधरसीधवे तव वद
नचंद्रमा रोचयति लोचनचकोरं। प्रिये चारुशी
ले मुंचयति मानमनिदानं। सपदि मदनानलो दह
ति मम मानसं देहि मुखकमलमधुपानं। सत्यमेवा ३५

35

उ दलना स्मवः प्रयोग ॥ शशि सवित्र नव भाति मे

गुरभर्तृवजन मोह कराल कोल सर्प्पो नड दिनि

भय भंजनाय सर्वानन्द यरमीश्व ह्येव सिद्धिमंत्रः

भय यति हृश्यामी ने नलिक्षपंचय पंचमेनकराा

मधुरा लापे स्लापं विनोदय हृष्टिभिः समर्गवि

विमाति भावनाना वह्नि मंचन मंचमा स्वय म

गा·दे·
गी·

नि कोकनद रूपे। कुसुम शर बाण भावेन यदि रंज
यसि कृष्ण मिद मेत दनु रूपे ४ स्फुरतु कुच कुंभयो
रुपरि मणि मंजरी रंजयतु तव हृदय देशं। रसतु
रसनापि तव घन जघन मंडले घोषयतु मन्मथ
निदेशं ५ स्थल कमल गंजनं मम हृदय रंजनं ज
नित रति रंग पर भागं। भण मसृण वाणि कर